

10/1/23

10/1/23

प्रगल्भी अर्थां सन्नि जयीं प्रणी (नदी) दार-२  
 आशक्त नगरि जति साद उक्ते श्री आशक्त नगरे  
 उक्त श्री न ने सन्नि जयीं प्रणी (कोरसा ही  
 जयीं स्रं प्रणी (अप्र. प्रार्थन ५२ के कड्ड प्रणी  
 कड्ड प्रणी के प्रार्थन विद्या जगत् ही प्रगल्भी  
 प्रोक्त प्रुसा प्रोक्त नगरे से उद प्रे ९  
 प्रना घे २५ ✓



10/1/23